सहजानंद शास्त्रमाला

जीवसंदर्शन

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

卐

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

(७७)

जीवसंदर्शन

लेखक:—

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी

"श्रीमत्सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक:—

मंत्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

१८५, ए रणजीतपुरी, सदर मेरठ।

उ० प्र०

सन्
१९६०

न्योछावर
≡) प्रति

प्रार्थनारूप में आत्मकीर्तन

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

हूं स्वतन्त्र निश्चल निष्काम । ज्ञाता द्रष्टा आतमराम ॥टेक॥

[१]

मैं वह हूं जो हैं भगवान, जो मैं हूं वह हैं भगवान ।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह राग वितान ॥

[२]

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान ।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ॥

[३]

सुख दुख दाता कोइ न आन, मोहराग रुष दुख की खान ।
निजको निज परको पर जान, फिर दुखका नहिं लेश निदान ॥

[४]

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्यागि पहुँचूं निजधाम, आकुलताका फिर क्या काम ॥

[५]

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जगका करता क्या काम ।
दूर हटो परकृत परिणाम, सहजानन्द रहूं अभिराम ॥

॥ अहिंसा धर्म की जय ॥

जीवसंदर्शन

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ तत् सत्, ॐ शुद्धं चिदस्मि ।

यह जीव अनादि कालसे जिस अवस्थामें रहा है उस अवस्थाका वर्णन करते हैं—उसके कुछ उत्थान होनेपर आने वाली अवस्थावोंका वर्णन करके अन्तमें परमात्मावस्थाका वर्णन करूंगा ।

यह जीव अनादिसे निगोद अवस्थामें रहता आया। निगोद का दूसरा नाम साधारण वनस्पति है, इस अवस्थामें अनन्त निगोद जीवों का स्थूल शरीर एक रहता है एक सेकिण्डमें प्रायः २३ बार जन्ममरण होजाता है, केवल स्पर्शन इन्द्रिय रहती है, अक्षरके अनन्तवें भाग ज्ञान होता है, अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण शरीर होता है, महान् दुःखकी अवस्था है । वह अवस्था अवद्ध नहीं है, किन्तु वहाँ ३ का पिण्ड है—१ जीव, २ कर्म, ३ शरीर। फिर भी तीनों की सत्ता यद्यपि एक नहीं होजाती तथापि परस्पर निमित्तनैमित्तकभाव सम्बन्ध ऐसा है जो तीनों विकृत हैं। (१) जीव में मुख्य लक्षण ये ३ हैं दर्शन ज्ञान चारित्र, सो निगोदके ये तीनों विपरीत अवस्थाको लिये हैं। दर्शन मिथ्यादर्शन है, ज्ञान मिथ्याज्ञान है. चारित्र मिथ्याचारित्र है। (२) कर्मकी प्रकृतियां १४८ हैं।

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८
नाम प्रकृति संख्या	ज्ञाना-वरण ५	दर्शना-वरण ९	वेदनीय २	मोहनीय २५+३ =२८	आयुकर्म ४	नामकर्म ९३	गोत्रकर्म २	अन्तराय-कर्म ५

ज्ञानावरण—१ मतिज्ञानावरण, २ श्रुतज्ञानावरण, ३ अवधिज्ञानावरण, ४ मनःपर्ययज्ञानावरण, ५ केवलज्ञानावरण।

दर्शनावरण—१ चक्षुर्दर्शनावरण, २ अचक्षुर्दर्शनावरण, ३ अवधि-दर्शनावरण, ४ केवलदर्शनावरण, ५ निद्रा, ६ निद्रानिद्रा, ७ प्रचला, ८ प्रचलाप्रचला, ९ स्त्यानगृद्धि।

वेदनीय—१ सातावेदनीय, २ असातावेदनीय।

मोहनीय—१ दर्शनमोहनीय, २ चारित्रमोहनीय।

दर्शनमोहनीय के ३ भेद हैं—१ मिथ्यात्व २ सम्यग्मिथ्यात्व ३ सम्यक् प्रकृति।

चारित्रमोहनीय के २ भेद हैं—१ कषाय २ नोकषाय।

कषाय १६ हैं—१-४ अनन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभ, ५-८ अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, ९-१२ प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, १३-१६ सज्वलन क्रोध मान माया लोभ।

नोकषाय के ९ भेद हैं—१ हास्य २ रति ३ अरति ४ शोक ५ भय ६ जुगुप्सा ७ पुरुषवेद ८ स्त्रीवद ९ नपुंसकवेद।

आयुकर्म ४ प्रकारका है— १ नरकायु २ तिर्यगायु, ३ मनुष्यायु ४ देवायु।

नामकर्म के ९३ भेद हैं—१ नरकगति, २ तिर्यग्गति, ३ मनुष्यगति, ४ देवगति, ५ एकेन्द्रिय, ६ द्वीन्द्रिय, ७ त्रीन्द्रिय, ८ चतुरिन्द्रय, ९ पंचेन्द्रिय जाति, १० औदरिक शरीर, ११ वैक्रियक शरीर, १२ आहारक शरीर, १३ तैजस शरीर, १४ कार्माण शरीर, १५ औदारिकाङ्गोपाङ्ग, १६ वैक्रियकाङ्गोपाङ्ग, १७ आहारकाङ्गोपाङ्ग, १८ निर्माण, १९ औदारिक वन्धन, २० वैक्रियकवन्धन, २१ आहारक बन्धन, २२ तैजसबन्धन, २३ कार्माणबन्धन, २४ औदारिकसंघात, २५ वैक्रियकसंघात, २६ आहारक संघात, २७ तैजससंघात, २८ कार्माणसंघात, २९ वज्रर्षभनाराचसंहनन, ३० वज्रनाराचसंहनन, ३१ नाराचसंहनन, ३२ अर्द्धनाराचसंहनन, ३३ कीलकसंहनन,

३४ असंप्राप्तसृपाटिका संहनन, ३५ समचतुरस्त्रसंस्थान, ३६ न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान, ३७ स्वातिसंस्थान, ३८ वामन संस्थान, ३९ कुब्जकसंस्थान, ४० हुण्डक संस्थान, ४१ स्निग्ध, ४२ रूक्ष, ४३ शीत, ४४ उष्ण, ४५ मृदु, ४६ कठोर, ४७ लघु, ४८ गुरुस्पर्श, ४९ अम्ल, ५० मधुर, ५१ कटु, ५२ कषायित, ५३ तिक्तरस, ५४ सुगन्ध, ५५ दुर्गन्ध, ५६ कृष्ण, ५७ पीत, ५८ नील, ५९ रक्त, ६० श्वेतवर्ण, ६१ नरकगत्यानुपूर्व्य, ६२ तिर्यग्गत्यानुपूर्व्य ६३ मनुष्य गत्यानुपूर्व्य, ६४ देवगत्यानुपूर्व्य, ६५ अगुरुलघु, ६६ उपघात, ६७ परघात, ६८ आतप, ६९ उद्योत, ७० उच्छ्वास, ७१ प्रशस्त विहायोगति, ७२ अप्रशस्त-विहायोगति, ७३ प्रत्येक शरीर, ७४ साधारण शरीर, ७५ त्रस, ७६ स्थावर, ७७ सुभग, ७८ दुर्भग, ७९ सुस्वर, ८० दुःस्वर, ८१ शुभ, ८२ अशुभ, ८३ सूक्ष्म, ८४ बादर, ८५ पर्याप्ति, ८६ अपर्याप्ति, ८७ स्थिर, ८८ अस्थिर, ८९ आदेय, ९० अनादेय, ९१ यशः कीर्ति, ९२ अयशः कीर्ति, ९३ तीर्थङ्कर।

गोत्रकर्म के २ भेद हैं—उच्चगोत्र, नीचगोत्र।

अन्तरायकर्म के ५ भेद हैं—दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय।

निगोद अवस्थामें बंधने वाली प्रकृतियां इस प्रकार है।

गुणस्थान	बंध	अबंध
मिथ्यात्व	१०९	११

इस तरह प्रकृतियाँ बद्ध होकर यदि निगोदमें ही बना रहे तो सत्त्व इस प्रकार होता है।

गुणस्थान	सत्त्व	असत्त्व
मिथ्यात्व	१३४	११

यदि कोई सम्यग्दृष्टि मनुष्यादि सम्यक्त्व से च्युत होकर परिभ्रमण कर निगोदमें पहुंचता है तो जब तक उसके सम्यकप्रकृति का उद्वेलन न हो तो इस प्रकार सत्त्व होता है।

गुणस्थान	सत्त्व	असत्त्व
मिथ्यात्व	१४५	३

यदि सम्यक् प्रकृति का उद्वेलन होगा तो इस प्रकार सत्त्व रहेगा

गुणस्थान	सत्त्व	असत्त्व
मिथ्यात्व	१४४	४

यदि सम्यक् प्रकृति मिश्रप्रकृति दोनों का उद्वेलन हो चुके तो इस प्रकार सत्व रहेगा

गुणस्थान	सत्त्व	असत्त्व
मिथ्यात्व	१४३	५

उस निगोद अवस्था में उदय इस प्रकार रहता है

गुणस्थान	उदय	अनुदय
मिथ्यात्व	७२	५०

निगोद जीव के शरीर इस प्रकार होते हैं:—(१) **औदारिकशरीर,** (२) **तैजसशरीर,** (३) **कार्मणशरीर**। यदि वे उत्पत्ति स्थान पर पहुंचकर लब्ध्यपर्याप्त हैं या जब तक निवृत्यपर्याप्त हैं तो उन निगोदों के इस प्रकार शरीर होते हैं:—(१) **औदारिकमिश्र** (२) **तैजस** (३) **कार्मण**। यदि विग्रह गतिमें हैं तो उनके इस प्रकार शरीर हैं—(१) **तैजस** (२) काम ।

निगोद जीवों के जो विभाव हैं, जिनके निमित्त से कर्म बंधते हैं जिन्हें आश्रव कहते हैं वे इस प्रकार हैं:—

गुणस्थान	मिथ्यात्व	अविरति	कषाय	योग	सर्व
मिथ्यात्व	१	७	२३	३ या २	३४, ३३

अब निगोद जीवों के आठों कर्मों के बंधोदय सत्त्वस्थान कहते हैं।

बंध	ज्ञानाव० ५	दर्शनावरण ९	वेदनीय २	मोहनीय २६	आयु २	नामकर्म २३-२५-२६	गोत्र २	अंतराय ५
उदय	५	६	१	२४	१	२१-२४-२५ २६	१	५
सत्त्व	५	९	२	२८	३	८९	२	५

जीवके कषायभावों और योगोंके निमित्तसे एक समय में जितने कार्माण वर्गणा बंधते है वे समयप्रवद्ध कहलाते है, वह समयप्रवद्ध जितनी सत्ता

की स्थिति को लेकर बंधता है उनमें किस प्रकार निषेक बट जाते हैं इसकी दृष्टान्त संदृष्टि बतलाते हैं:—

गुण हानि	१	२	३	४	५	६
	१६×३२	१६×१६	१६×८	१६×४	१६×२	१६×१
८	२८८	१४४	७२	३६	१८	९
७	३२०	१६०	८०	४०	२०	१०
६	३५२	१७६	८८	४४	२२	११
५	३८४	१९२	९६	४८	२४	१२
४	४१६	२०८	१०४	५२	२६	१३
३	४४८	२२४	११२	५६	२८	१४
२	४८०	२४०	१२०	६०	३०	१५
१	५१२	२५६	१२८	६४	३२	१६
आयात	३२००	१६००	८००	४००	२००	१००

यहाँ सर्व द्रव्य ६३०० कार्माणवर्गणा जिसमें नाना गुणहानि ६, गुणहानि आयाम ८, स्थिति ६×८=४८,२×२×२×२×२×२=६४— =६३) ६३००) १०० अंतिम गुणहानिका सर्व द्रव्य हुआ पंचम चतुर्थ आदि गुणहानियों में दुगुणा दुगुणा। निषेक व चम इस प्रकार निकलते हैं ?

ऊपर के नकशा में एक खाने में जो संख्या है वह १ निषेक की स्पर्द्धकों के रूप में हैं। अब स्पर्द्धकों में अविभाग प्रतिच्छेदों की दृष्टिसे वर्णन करते हैं—

प्रथम गुण हानि				द्वितीय गुण हानि				तृतीय गुण हानि				चतुर्थ गुण हानि				पंचम गुण हानि				षष्ठ गुण हानि			
प्र० स्प०	द्वि० स्प०	तृ० स्प०	च० स्प.	प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प्र०	द्वि०	तृ०	च०
७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७	९१	९	९९
६	१०	१४	१८	२२	२६	३०	३४	३८	४२	४६	५०	५४	५८	६२	६६	७०	७४	७८	८२	८६	९०	९४	९८
५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१	४५	९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८१	८५	८९	९३	९७
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४	८८	९२	९६

इनमें कहीं भी कितने अविभागप्रतिच्छेदों का अभाव भी रह सकता है।

इस ही प्रकार कर्म बन्धन की शैली सब ही बद्ध जीवों की समझना चाहिए। इस निगोद जीव के मन तो होता ही नहीं सो विवेक से कोई योग्य कार्य करने में समर्थ तो नहीं है, परन्तु काल लब्धि के कारण कर्मों की परिणति से उस जीव के उस भव के योग्य कुछ अच्छे भावों से कुछ उत्थिति हुई तो वह निगोद अवस्था से निकलकर प्रत्येक शरीर स्थावरों में उत्पन्न हुआ तब वहाँ जैसे पृथ्वीकाय में उत्पन्न हुआ तब कर्मप्रकृतियों का बन्ध इस प्रकार होने लगता गु० मि० १/बंध १०९/अबंध ११ उदय प्रकृति इस प्रकार रहती हैं गु० मि०/उ० ७९ अनु- ४३ तथा सत्त्व इस प्रकार है गु- मि०/स० १४५/अ० ३जलकायमें गु० मि०/उ० ८०/अ० ४२ जानना। अग्निकाय वायुकायमें बंध उदय व सत्त्व इस

प्रकार है गु० मि० १/बं० १०५ अ० १५/उ० ७७/अनु० ४५/स० ४४/अस० ४। किन्हीं आचार्ग परम्परा से यह मत है कि द्वितीय गुणस्थान में मरण करने वाला जीव पृथ्वी जल प्रत्येक शरीर स्थावरों में उत्पन्न हो सकता है उस मत से इनके अपर्याप्तावस्था में बंध उदय सत्त्व इस प्रकार है गु० १,२/बं १०९,९४/अ० ११,२६/उ० ७१,७०/अ० ५१/५२ स० १४४, १४३ अस० ३, ५। केवल मिथ्यात्व गुणस्थान की मान्यता में मिथ्यात्व गुणस्थान में उल्लिखित ही जानना। इन एकेन्द्रिय जीवों के जिन भावोंसे कर्मबंध होता है उन्हें आश्रव कहते है उस आश्रव की संदृष्टि इस प्रकार है—

सर्व	११ से १६ तक	१२ से १७ तक	१२ से १७ तक	१३ से १८ तक
योग	१ औ० औमि० का० में से	१ औ० औमि० का० में से	१ औ० औमित का० में से	१ औ० औमि० का० में से
जुगुप्साभय	०	१ भय	१ जुगुप्सा	२ भय जुगुप्सा
हास्य शोक युग्म	२ (कोई एक युग्म)	२ (कोई एक युग्म)	२ (कोई एक युग्म	२ (कोई एक युग्म)
वेद	१—नपु०	१—नपु०	१ नपु०	१ नपु०
कषाय	४—४—४—४	४—४—४—४	४—४—४—४	४—४—४—४
कायाविरति	१-२-३-४-५-६	१-२-३-४-५-६	१-२-३-४-५-६	१-२-३-४-५-६
इन्द्रियाविरति	१ स्पर्शनावि०	१ स्पर्शनावि०	१ स्पर्श०	१ स्पर्शना०
मिथ्यात्व	१ अज्ञानमि०	१ अज्ञान मि०	१ अज्ञानमि०	१ अज्ञानमि०

उक्त संदृष्टि में जो कायाविरति लिखी है उसका तात्पर्य कभी १ अविरति कभी २ आदि इसका स्पष्टीकरण करते हैं कि एक कितने तरह से होता २ कितने तरह से होता, ३ कितने तरह से होता आदि।

गुणितभाज्य	६	५	४	३	२	१
गुणितभाजक	१	२	३	४	५	६

जितने का भंग निकालना हो (इसका संकेत नीचे के कोष्ठ से करे) उतनेका (पूर्व संख्यावोंसे गुणित) भाग ऊपर गुणित में दो-भंग संख्या लब्ध होगी।

यथा १)६(१=१ वाले ६/१+२=२)६+५=३०(१५=२ वाले १५
इसी तरह करके—६)१२०(२०=३ वाले २०/२४)३६०(१५=४ वाले १५
१२०)७२०(६=५ वाले ६/७२०)७२०(१=६ वाला १

उपरि लिखित प्रकारों का संक्षेप इस प्रकार है—

१ वाले	२ वाले	३ के	४ के	५ के	६ का
६	१५	२०	१५	६	१

एकेन्द्रियजीवों में भाव इस प्रकार होते हैं—	एकेन्द्रिय जीवों में पृथक् पृथक विवरण से कर्मोंका बन्ध उदय सत्त्व इस प्रकार है—
मूलभाव ३	ज्ञानावरण—५ बंध, ५ उदय, ५ सत्त्व
उत्तर भाव २३	दर्शनाव०—९ बंध, ६ उदय, ९ सत्त्व
मिश्रभाव ८	वेदनीय—२ बंध, २ उदय, २ सत्त्व
औदयिक ८	मोहनीय—२६ बन्ध, २४ उदय, २८ सत्त्व
पारिणामिक २ गुण्य	आयु—२बन्ध, १ उदय, ३ सत्त्व
गुणकार	नाम—२६ बन्ध, २७ उदय, ९२ सत्त्व
क्षेप	गोत्र—२ बन्ध, १ उदय, २ सत्त्व
भङ्ग	अन्तराय—५ बन्ध, ५ उदय, ५ सत्त्व

अब एकेन्द्रियोंमें पूर्वोक्त आस्रवोंके भङ्ग इस प्रकार हैं—

११ आश्रवों के भंग	१२ आश्रवों के भंग	१३ आश्रवों के भंग	१४ आश्रवोंके	१५ आश्रवोंके
२×१=२	२×५=१०	३×४=८	२×३=६	२×२=४
	२×१=२	२×५=१०	२×४=८	२×३=६
	२×१=२	२×५=१०	२×४=८	२×३=६
		२×१=२	२×५=१०	२×४=८
२× =६	१४×३=४२	३०×३=९०	३२×३=९६	२४×३=७२

१६ आश्रवों के भंग	१७ आश्रवो के भंग	१८ आश्रवों के भंग	सर्व भंग
२×१=२	२×१=२	२×१=२	६
२×२=४	२×१=२		४२
२×२=४	२×२=४		९०
२×३=६			९६
			७२
			४८
			२४
			६
१६×३=४८	८×३=२४	२×३=६	३८४

उक्त चित्र में पहिला २ अंक के मायने हास्य रति या अरति शोक इन २ भेदों से है. उसमें जिसका गुणा किया है वह कायाविरति के भंग से तात्पर्य रखता है, विवक्षित आश्रव के योग में जो ३ अंक है जो गुणक के रूप में हैं उसका मतलब औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्माण इन तीन योगों से है। इस तरह एकेन्द्रियों में ३८४ तरह से आश्रव पाये जाते हैं। एकेन्द्रियों में आश्रव का वर्णन विशेष रीति से समाप्त हुआ। समान्यरीति से मि० १ अविरति ७ कषाय २३ योग ३=३४ आश्रव होते हैं। इन आश्रवों के द्वार से जो कर्मबंध होता है उनकी जो स्थिति बधती है उसमें आवाधाकाल छोड़कर शेष स्थितियों में वे कर्मवर्गणायें बट जाती है इस विषयको पहिले नकशा द्वारा बतलाया गया है। जैसे एक समय में बांधा हुआ पुञ्ज ४८ समयस्थिति आबाधा के अतिरिक्त मानकर बाँटा गया है फिर इसके समयमें बांधा हुआ समयप्रबद्ध ४८ समय में बाँटा गया है इसका पहिला समय जो कि पहिले समयप्रबद्ध का दूसरा समय हैं, वहां ४८० वर्गणा है, दूसरे समयप्रबद्धके ५१२ हैं तीसरे समय

में बाँधे हुए के पहिले समय में ५१२ तब अन्य के ४८०, ४४८ है। इस तरह ४८ समय प्रबद्धों का नकशा फैलाया जावे तो प्रति समय सत्ता कितनी रही ? कुछ कम डेड़ गुण हानिसे गुणित समयप्रबद्ध। अर्थात् समयप्रबद्धमें डेड़ गुण हानि आयाम का गुणाकरे जो लब्ध हो उसमें से "गुण हानि के अठारहवें भाग कर गुणित समयप्रबद्ध और किञ्चित् अधिक आधा समय प्रबद्ध (जैसे ३३०४) करि हीन गुणहानिनानागुणहानि गुणित समयप्रबद्ध का ६३ वां भाग" इतना कम कर दिया जो लब्ध हो उतना सत्त्व बना रहता है। जैसे—

६३००×१२=७५६०० इसमें से ६३००×$\frac{१}{१८}$=२८००, १००×८ =८००×६=५८००-३३०४=१४९६, २८००+१ ९६=४२९६ इतना घटावे ७५६००—४२९६=७१३०४ वर्गणा लब्ध हुई इतनी प्रति समय सत्ता रहती है।

इस विषय को नकशा द्वारा फैलाया जासकता है ४८ समयो का अर्थात् ४८ समयके जो १—१ कोठा है उनमें प्रत्येकमें ४८—४८ कोठा हो जायगें तब प्रथम माने हुये ४८ कोठे का जोड़ करे तब एक कोठे की वर्गणायें कितनी हो जाती हैं इसे नकशा द्वारा बताते हैं :—

	पहिली गुण०	दूसरीगुण०	तीसरीगुणहानि	चौथीगुण०	पाँ० गुण०	षष्टम गुण
८	३३८८	१६४४	७७२	३६६	११८	९
७	३७०८	१८०४	८५२	३७६	१३८	१९
६	४०६०	१९८०	९४०	४२०	१६०	३०
५	४४४४	२१७२	१०३६	४६७	१८४	४२
४	४८६०	२३८०	११४०	५२०	२१०	५५
३	५३०८	२६०४	१२५२	५७६	२३८	६९
२	५७८८	२८४४	१३८२	६३६	२६८	८४
१	६३००	३१००	१५००	७००	३००	१००
जोड	३७८५६	१८५२८	८८६४	४०३२	१६१६	४०८

इन सबका जोड़—७१३०४ है यह सत्त्व है। उक्त नकशे में से जैसे षष्ठ गुण हानि का फैलाव।

९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

यह बिवक्षित छठी गुणहानि में पहिले के ४७ समयप्रवद्धों का व विवक्षित का द्रव्य है इन सबका जोड़ ४०८+३९२=४८० है। जिसमें अन्तिम गुणहानि से गुणहानि आयामके ४०८ अङ्क लेना। इसी तरह पाँचवी गुणहानि को फैलावे:—

१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२
१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२
१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२
१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२
१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२
१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२
१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२
१८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२

इन सबका जोड़ ८ स्थानों का ८१६ है इसमें पहिली आखिरी १०० को ८ जगह रखना सो ८०० इस तरह १६१६ वर्गणा हुई। इसी तरह चौथी तृतीय सब गुणहानि जानें। एक ममय में बन्धे हुये समयप्रबद्ध की वर्गणायें जो विभक्त होती हैं वे पहिले समय में अधिक व अगले समयों में कम कम, किन्तु अनुभाग पहिले समय में कम व अगले समयों में अधिक अधिक रहता है। अनुभाग फल की शक्तिका नाम है। अब चतुर्थ गुणहानि का फैलाव करते हैं—

३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४
३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४
३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४
३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४
३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४
३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४
३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४
३६ ४० ४४ ४८ ५२ ५६ ६० ६४

इन आठ स्थानों का जोड़ १६३२ है इसमें पहिली आखिरी ३०० को ८ जगह रखा सो २४० जोड़ने पर १६३२ + २४०० = ४०३२ हुए।

अब तृतीय गुणहानि का फैलाव करते हैं:—

७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८
७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८
७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८
७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८
७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८
७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८
७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८
७२ ८० ८८ ९६ १०४ ११२ १२० १२८

इन आठ स्थानों का जोड़ ३२६४ है इसमें पहिली आखिरी ७०० को आठ जगह रखें सो ५६०० जोड़ने पर ८८६४ हुए।

अब द्वितीय गुणहानि का फैलाव करते हैं—

१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६
१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६
१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६
१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६
१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६
१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६
१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६
१४४ १६० १७६ १९२ २०८ २२४ २४० २५६

इनमें ८ गुणहानि आयामों का जोड़ ६५२८ हैं इसमें पहिली आखिरी १५०० को आठ जगह रखे सो १२००० को जोड़ने से कुल १८५२८ वर्गणायें हुईं। अब प्रथम गुणहानि का फैलाव करते हैं—

२८८ ३२० ३५२ ३८४ ४१६ ४४८ ४८० ५१२
२८८ ३२० ३५२ ३८३ ४१६ ४४८ ४८० ५१२
२८८ ३२० ३५२ ३८४ ४१६ ४४८ ४८० ५१२
२८८ ३२० ३५२ ३८४ ४१६ ४४८ ४८० ५१२
२८८ ३२० ३५२ ३८४ ४१६ ४४८ ४८० ५१२
२८८ ३२० ३५२ ३८४ ४१६ ४४८ ४८० ५१२
२८८ ३२० ३५२ ३८४ ४१६ ४४८ ४८० ५१२
२८८ ३२० ३५२ ३८४ ४१६ ४४८ ४८० ५१२

इन स्थानोंका जोड़ १३०५६ है। इसमें अनन्तर पूर्व की आखिरी ३१०० को ८ जगह रखने पर जो २४८०० हुए, जोड़ने पर कुल वर्गणायें ३७८५६ हुए। अब इन विवक्षित छहों गुणहानिके ४८ समयोंमें जुड़े हुए वर्गणाओं को जोड़े तो:—३७८५६ + १८५२८ + ८८६४ + ४०३२ + १६१६ + ४०८ = ७१३०४ हुए, यह कुछ कम डेढ़ गुणहानि प्रमाण सब है।

अब दूसरे प्रकार से सत्त्व का विधान कहते हैं—

२८८ × ८/१४४ × ८, + ८/७२ × १६, + ८/
३६ × २४, + ८/१८ × ३२, + ८/९ × ४० + ८/
३२० × ७/१६० × ८, + ७/८० × १६, + ७/
४० × २४, + ७/२० × ३२, + ७/१० × ४०, + ७/
३५२ × ६/१७६ × ८, + ६/८८ × १६, + ६/
४४ × २४, + ६/२२ × ३२, + ६/११ × ४०, + ६/
३८४ × ५/१९२ × ८ + ५/९६ × १६, + ५
४८ × २४, + ५/२४ × ३२, + ५/१२ × ४०, + ५/
४१६ × ४/२०८ × ८, + ४/१०४ × १६, + ४/
५२ × २४, + ४/२६ × ३२, + ४/१३ × ४०, + ४
४४८ × ३/२२४ × ८, + ३/११२ × १६, + ३/

५६×२४,+३/२८×३२,+३/१४×४०,+३/
४८०×२/२४०×८,+२/१२०×१६,+२/
६०×२४,+२/३०×३२,+२/१५×४०,+२/
५१२×१/२५६×८,+११/२८×१६,+१/
६४×२४,+१/३२×३२,+१/१६×४०,+१/

इसमें ९ की वर्गणा ४८ वार आई १० की ४७ वार ११ की ४६ वार इस तरह सबका लगा लेना चाहिये। इस प्रकार अन्य प्राणियों की भांति इस निगोदिया जीवके भी डेढ़ गुणहानिसे गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण कर्म वर्गणाकी सत्ता रहती है।

एकेन्द्रियजीवके जीव समास इस प्रकार है—१ एकेन्द्रिय। २ जीव समास— १ पर्याप्त २ अपर्याप्त। ३ जीव समास—१ पर्याप्त २ निर्वृत्य पर्याप्त ३ लब्ध्यपर्याप्त। ४ जीव समास—१ बादर पर्याप्त २ बादर अपर्याप्त ३ सूक्ष्म पर्याप्त ४ सूक्ष्म अपर्याप्त। ५ जीव समास—१ साधारण २ प्रत्येक सूक्ष्म पर्याप्त ३ प्रत्येक सूक्ष्म अपर्याप्त ४ प्रत्येक बादर पर्याप्त ५ प्रत्येक बादर अपर्याप्त। ६ जीव समास—१ साधारण पर्याप्त २ साधारण अपर्याप्त ३ प्रत्येक सूक्ष्म पर्याप्त ४ प्रत्येक सूक्ष्म अपर्याप्त ५ प्रत्येक बादर पर्याप्त ६ प्रत्येक बादर अपर्याप्त। ७ जीव समास— १ साधारण सूक्ष्म २ साधारण बादर पर्याप्त ३ साधारण बादर अपर्याप्त ४ प्रत्येक सूक्ष्म पर्याप्त ५ प्रत्येक बादर पर्याप्त ६ प्रत्येक सूक्ष्म अपर्याप्त ७ प्रत्येक बादर अपर्याप्त। ८ जीव समास—१ साधारण सूक्ष्म पर्याप्त २ साधारण सूक्ष्म अपर्याप्त ३ साधारण बादर पर्याप्त ४ साधारण बादर अपर्याप्त ५ प्रत्येक सूक्ष्य पर्याप्त ६ प्रत्येक सूक्ष्म अपर्याप्त ७ प्रत्येक बादर पर्याप्त ८ प्रत्येक बादर अपर्याप्त। ९ जीवसमास—१ पृथ्वीकायिक २ जल कायिक ३ अग्निकायिक ४ वायुकायिक ५ प्रत्येक बनस्पति ६ साधारणवनस्पति बादर पर्याप्त ७ साधारण वनस्पति बादर अपर्याप्त ८ साधारण वनस्पति सूक्ष्म पर्याप्त ९ साधारण वनस्पति बादर अपर्याप्त।

१० जीव समास—१-२ पृथ्वीकायिक पर्याप्त अपर्याप्त ३-४ जलकायिक पर्याप्त अपर्याप्त ५-६ अग्निकायिक पर्याप्त अपर्याप्त ७-८ वायुकायिक पर्याप्त अपर्याप्त ९-१० वनस्पतिकायिक पर्याप्त अपर्याप्त। ११ जीव समास—बादर

पृथ्वीकायिक २ सूक्ष्म पृथ्वीकायिक ३ बादर जलकायिक ४ सूक्ष्म जलकायिक ५ बादर अग्निकायिक ६ सूक्ष्म अग्निकायिक ७ बादर वायुकायिक ८ सूक्ष्म वायुकायिक ९ बादर साधारण बनस्पतिकायिक १० सूक्ष्म साधारण बनस्पतिकायिक ११ प्रत्येक वनस्पति। १२ जीव समास—पूर्वोक्त १० व ११ वा प्रत्येक वनस्पति पर्याप्त १२ प्रत्येक वनस्पति अपर्याप्त। १३ जीव समास—पूर्वोक्त १० व ११ प्रत्येक वनस्पति पर्याप्त १२ प्रत्येक वनस्पति अपर्याप्त। १३ जीव समास—पूर्वोक्त १० व ११ प्रत्येक वनस्पति पर्याप्त १२ प्र० व० निर्वृत्यपर्याप्त १३ प्र० व० लब्ध्यपर्याप्त। १४ जीव समास—१ बादर पृथ्वीका० २ सू० पृ० ३ बादर ज० ४ सूक्ष्म ज० ५ बादर अग्नि ६ सूक्ष्म अ० ७ बादर वायु ८ सूक्ष्म वा० ९ बादर साधारण व० पर्याप्त १० बादर साधारण बनस्पति अपर्याप्त ११ सूक्ष्म साधारण वनस्पति पर्याप्त १२ सूक्ष्म साधारण वन० अप० १३ प्रत्येक बनस्पति पर्याप्त १४ प्रत्येक वनस्पति अपर्याप्त। १५ जीव समास पूर्वोक्त १२ व १३ प्रत्येक वनस्पति पर्याप्त १४ प्रत्येक वन० लब्ध्यपर्याप्त १५ प्रत्येक वनस्पति निर्वृत्यपर्याप्त। १६ जीव समास—१ पृथ्वी प० २ पृथ्वी अ० ३ जल प० ४ जल अ० ५ अग्नि प० ६ अग्नि अ० ७ वायु प० ८ वायु अ० ९ चतुर्गतिनिगोद प० १० चतुर्गति० अ० ११ नित्यनि०प १२ नित्य० अ० १३ सप्रतिष्ठित प्रत्येक १४ सप्र० प्र० अ० १५ अप्र० प्र० प० १६ अप्र० प्र० अ। १७ जीव समास—१ बादर पृ० २ सू० पृ० ३ वा० ज० ४ सू० ज० ५ वा० अग्नि ६ सू० अग्नि ७ बादर वा० ८ सू० वा० ९ चतुर्गतिनिगोद सूक्ष्म प० १० चतु० सू० अ० ११ नित्यनिगोद सू० प० १२ नित्य० सू० अप० १३ चतु० वा० प० १४ चतु० वा० अ० १५ नित्य नगोद वा० प० १६ नित्य निगोद वा० अ० १७ प्रत्येक वनपति।

१८ जीव समास—पूर्वोक्त ८, ९ वां वनस्पतिकायिक, इन नौके पर्याप्त व अपर्याप्त = १८। १९ जीव समास—पूर्वोक्त ८ के पर्याप्त अपर्याप्त = १६; १७ चतुर्गतिनिगोद १८ नित्यनिगोद, १९ प्रत्येक वनस्पति। २० जीव समास—पूर्वोक्त ८ के पर्याप्त व अपर्याप्त = १६ व १७ वां साधारण वन० पर्याप्त १८ साधा० वन० अपर्याप्त १९ प्रत्येक वनस्पति पर्याप्त

२० प्रत्येक वनस्पति अपर्याप्त। २१ जीव समास—पृथ्वी, ज ा, अग्नि, वायु चतुर्गतिनिगोद, नित्यनिगोद, प्रत्येक वनस्पति इन सातों के पर्याप्त निबृत्य-पर्याप्त लब्ध्यपर्याप्त के भेद से २१। २२ जीव समास—१ वा० पृ० २ सू० पृ० ३ वा० ज० ४ सू०ज० ५ वा० अग्नि ६ सू० अग्नि ७ वा० वायु ८ सू० वायु ९ चतुर्गतिनिगोद, १० नित्यनिगोद, ११ प्रत्येक वनस्पति इनके पर्याप्त व अपर्याप्त सो=२२। २३ जीव समास—पूर्वोक्त १० के पर्याप्त व अपर्याप्त=२०, २१ वां प्रत्येक वनस्पति पर्याप्त २२ प्रत्येक वनस्पति निवृत्यपर्याप्त, २३ प्रत्येक वन० लब्ध्यपर्याप्त। २४ जीव समास–पूर्वोक्त ८ व ९ वां चतुर्गतिनिगोद १० नित्यनिगोद ११ सप्रतिष्ठित प्र० १२ अप्रतिष्ठित प्रत्येक इनके पर्याप्त व अपर्याप्तके भेदसे=२४। २५ जीव समास–पृथ्वी जलअग्नि वायु चतुर्गतिनिगोद नित्यनिगोद इन ६ के बादर व सूक्ष्म=१२ फिर पर्याप्त व अपर्याप्त सो=२४ व २५ वाँ प्रत्येक वनस्पति। २६ जीव समास—पूर्वोक्त २४ व २५ वां प्रत्येक वनस्पति पर्याप्त २६ प्रत्येक वनस्पति अ०। २ जीवसमास–पृथ्वी जल, अग्नि, वायु के सूक्ष्म व बादर=८ व ९ वां वनस्पतिकायिक इन ९ के पर्याप्त निर्वृत्य-पर्याप्त, लब्ध्य- पर्याप्त इस तरह २७।

२८ जीव समास–पृ०, ज०, अ०, वा० चतु० नित्य० इन ६ के सूक्ष्म व बादर=१२, १३ सप्रतिष्ठित प्रत्येक, १४ अप्रतिष्ठितप्रत्येक इन १४ के पर्याप्त व अपर्याप्त=२८। २९ जीव समास –पृ० ज० अ० वा० च० नि० के सूक्ष्म व बादर=१२ पर्याप्त व अपर्याप्त=२४, २५ तृण २६ वेलि, २७ गुल्म, २८ बृक्ष, २९ कंद मूल। ३० जीव समास—पृ० ज०, अ०, वा०, वन० इन पाचों के सूक्ष्म बादर भेद से १० हुए। इनके पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त लब्ध्यपर्याप्त इस तरह ३०। ३१ जीवसमास—पृ० ज० अ० वा० साधा० ये पांच सूक्ष्म व बादर=१० इनके पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त लब्ध्यपर्याप्त=३० व ३१ वां प्रत्येक वनस्पति। ३२ जीव समास—३० उपर्युक्त व ३१ वां प्रत्येक वन० प०, ३२ वां प्र० व० अ०। ३३ जीव समास–पृ०, ज०, अ०, वा०, साधा० ये पांच सूक्ष्म व बादर—१० व ११ वाँ प्रत्येक वनस्पति इन सबके पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त व लब्ध्यपर्याप्त=३३। ३४ जीव समास–पृ०, ज०, अ०, वा०, साधारण व० ये बादर व सूक्ष्म=१० इनके पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त लब्ध्यपर्याप्त

३१ सप्रतिष्ठितप्रत्येक बन० प० ३२ सप्रति० अ०, ३३ अप्रतिष्ठि प०, ३४ अप्रति० अ०। ३५ जीव समास—पृ० ज० अ० वा साधारणवनस्पति ये पांच वादर व सूक्ष्म=१० इनके पर्याप्त, निवृत्यपर्याप्त, लब्ध्यपर्याप्त=३०, ३१ तृण, ३२ बल्लि, ३३ गुल्म, ३४ वृक्ष, ३५ मूल। ३६ जीव समास—१ पृ० ज० अ० वा० चतु० नित्यनि० ये ६ बादर व सूक्ष्म=१२ इनके पर्याप्त निर्वृ०, लब्ध्य०=३६, ३७ वां प्रत्येक वनस्पति। ३८ जीव समास—पूर्वोक्त ३६ व ३७ वां प्रत्येक व० प० ३८ प्रत्येक० अ०। ३९ जीव समास—पूर्वोक्त ३६, ३७ वां सप्रति० प० ३८ सप्र० अप० ३९ गुल्म ४० बृक्ष ४१ मूल। ४२ जीव समास—पृ० ज० अ० वा० चतु० नित्य० इन छह के बादर व सूक्ष्म =१२, १३ वां सप्रतिष्ठित प्रत्येक १४ अप्रतिष्ठित प्रत्येक इन १४ के पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त व लब्ध्यपर्याप्त इस तरह ४२। इसी प्रकार भेद पृथ्वी के ३६ भेद, जल के ७, अग्नि के ६, वायु के ७, चतुर्गतिनिगोद १ नित्यनिगोद १ =५८ ये बादर व सूक्ष्म=११६ व ५ प्रत्येक वनस्पति के सप्रतिष्ठित व अप्रतिष्ठित=१० सर्व १२६ के पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त व लब्ध्यपर्याप्त=३७८ जीव समास हुए। यदि प्रत्येक वनस्पति के अन्य प्रकार के भेद करें तब मूलोत्थ बीजोत्थ आदि २५ व इनके सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित=५० व पूर्वोक्त ११६=१६६ इनके पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त व लब्ध्यपर्याप्त=४९८ एकेन्द्रिय के जीव समास लगा लेना चाहिये।

अब एकेन्द्रिय जीवोंकी पर्याप्तियां कहते हैं। पर्याप्तमें४, अपर्याप्तमें३ अप०, विग्रहवतीगति/०, एकेन्द्रिय जीवोंके प्राण इस प्रकार होते है/पर्याप्तमें/४, अपर्याप्तमें ३ एकेन्द्रिय जीवोंके संज्ञायें ४ होती हैं—आहार, भय, मैथुन, परिग्रह। एकेन्द्रिय जीव केवल तिर्यग्गातिमें ही होंते हैं पृथ्वी जल अग्नि वायु चतुर्गतिनिगोद प्रत्येक वनस्पति ये सब तिर्यञ्च हैं। इनके केवल स्पर्शन इन्द्रिय होती है। पृथ्वीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय वनस्पतिकाय उनमें ५ कायोंमें ये होते है एक जीवके एक एक काय हैं। एकेन्द्रिय जीवोंके योग ३ है—कार्माणकाय योग, औदारिक मिश्रकाययोग औदारिककाय योग एक जीबके एकबारमें १ ही योग है। ये नपुंसकवेदी ही हैं। एकेन्द्रिय जीवोंमें २३ कषाय होती है। अनंतानुबंधी क्रोध माया लोभ, अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोधमान माया लोभ संज्वलन क्रोध मान माया लोभ, हास्य अरति शोक भय

जुगुप्सा नपुंसकवेद। एक जीवमें एक समय ४ क्रोध या ४ अन्य व हास्यरति या आरतिशोक व भय, जुगुप्सा नपुंस वेद इस तरह ९ कषाय होती हैं। इसके भंग ४×२×२=१६ होते हैं। भय या जुगुप्सा एक कम करने पर ८ कषायें होती हैं इसके भी भंग १६ होते हैं। भय जुगुप्सा दोनों घटा देने पर ७ कषायें होती हैं इसके भंग ४×२=८ होते हैं। अनंतानुबंधी रहित मिथ्यात्वके क्षणमें ३ कषाय होनेसे ८, ७, ६ कषायका उदय एक समयमें है। इनके भंग क्रमशः १२, १२, ६ होते हैं। एकेन्द्रिय जीवोंके कुमतिज्ञान व कुश्रुतज्ञान होता है। ये असंयमी होते हैं। एकेन्द्रियोंके कृष्णनीलकापोत ये ३ अशुभलेश्यायेहोती हैं। एकेन्द्रिय जीव तिर्यगायु या मनुष्यायुका बंधकर सकते हैं, देवायु या नरकायुका बंध नहीं कर सकते। आयु का बंध लेश्याके ८ मध्यमाँशोमें ही होता है। तीव्र तीव्रतर तीव्रतम व मंद मंदतर मंदतम अथवा जघन्य मध्यम उत्कृष्ट अंश की अपेक्षा लेश्याके अठारह अंश हैं। तथा लेश्यावोंके शिलाभेद पृथ्वीभेद धूलिभेद व जलरेखाके व आयुबंधाबंध हिसाबसे १४ अंश किये हैं। उनमें मध्यम ८ अंश आयुबंधके योग्य है इस तरह गतिमें पहुंचानेके योग्य १८ व आयुबंधके योग्य ८ इस तरह २६ अंश हैं। यहां किस लेश्यामें मरणकर किस गतिमें पहुंचना होता है इसका नकशा लिखते है। इसमें गति योग्य अठारह अंशों का विवरण हैं:—

शुक्ल उ०	सर्वार्थसिद्धि	कपोत ज०	पहिले नरकके पहिले इन्द्रकविल में
शुक्ल म०	आनतसेअपराजिततक	कपोतम०	जघन्य उत्कृष्टके बीचमें
		कपोत उ०	तीसरे नरककेद्विचरमपटलकेइन्द्रकों
शुक्ल ज०	शतार सहस्रार	नील ज०	तृतीय नरकके अंतिमपटलके इन्द्रकमें
पद्म उ०	शतरिसहस्रार	नील म०	बीच में
पद्म म०	ब्रह्मसे महाशुक्र तक	नील उ०	पंचमपृथ्वीके द्विचरम पटलके इन्द्रकमें
पद्म ज०	सानत्कुमारमाहेन्द्र	कृष्ण ज०	पंचम पृथ्वीके अंतिमपटल इन्द्रकमें
पीत उ०	सानत्कुमार माहेन्द्र अंतिम पटलके श्रेणिवद्ध विलोंमें	कृष्ण म०	पंचमके चरम पटलसे ६ व ७ के श्रेणि वद्ध विलोमें

पोत म० सा० के द्वितीयपटल कृष्णउ० सातवें नरकके इन्द्रक में से सा०के द्विचरमपटल तक

पींत ज० सौधर्मेशानके प्रथम पटलमें

अब आयु के बंधाबंध स्थानों को दिखाते है—

कषायनि के चार शक्ति स्थान	तीव्रतर शिला भेद समान	तीव्रभूभेदसमान						मंद धूलि भेद समान					मंदतर जल रेखा समान
१४ लेश्या स्थान	१ कृष्ण	कृष्ण १	कृष्णादि २	कृष्णादि ३	कृष्णादि ४	कृष्णादि ५	कृष्णादि ६	कृष्णादि ६	नीलादि ५	कापोतादि ४	पीतादि ३	पद्मादि २	शुक्ल १	शुक्ल १
आयुबंधा-बंध स्थान	०	नरकायु १/०	नरकायु १/०	नरकायु १/०	नरकायु १ न० ति० २	न०ति०म०३	सब ४	सब ४	सब ४	सब ४	ति०म०दे०३ म० दे० २	देवायु १	देवायु १	देवायु १	०	०	०	०
				१		२	३	४		५	६	७	८				

इनमें मध्यके ८ अंश आयुर्बंधके कारण है और आदिके ३ एवं अन्तके ३ ये ६ अंश की लेश्यामें आयुर्बन्ध नहीं होता। एकेन्द्रियजीवोंमें उनकी आयु के ८ वार त्रिभाग करके प्रत्येक त्रिभागमें आयुर्बंध संभावित है। यदि आठों त्रिभागों (अपकर्ष कालों) में आयुर्वन्ध न हुआ मरणकालके उपचरमावलि में अवश्य आयुर्वन्ध होजाता है। जैसे किसी देहधारी की ६५६१ वर्षकी आयु है तो पहिला अपकर्ष २१८७ वर्ष आयु शेष रहने पर है। पुनः ७२९, २४३, ८१, ७२, ९, ३, १ वर्ष शेष रहने पर अपकर्षकाल होता है। प्रकरणवश यहाँ यह विशेष जनना कि देव व नरक जीवों का अपकर्ष अंतिम ६ माह शेष रहने पर उस ६ माहके त्रिभाग करते जाना चाहिये। तथा इसी प्रकार भोगभूमिज तिर्यञ्च मनुष्योंके भी ६ माहके त्रिभाग करते जाना चाहिये। कोई आचार्य

"भरत एरावत क्षेत्रके भोगभूमि कालमें भोगभूमिजोंकी आयुके ९ माह शेष रहने पर त्रिभाग करना चाहिये" कहते हैं।

एकेन्द्रिय पर्याप्तकों के आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास ये ४ पर्याप्ति होती हैं। निर्वृत्यपर्याप्तके ये ४ निर्वृत्यपर्याप्ति (अपर्याप्ति) रहती हैं। लब्ध्य-पर्याप्तके ये ४ अपर्याप्ति होती हैं। किन्तु विग्रहगतिमें जीवक पर्याप्ति नही होती। एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके स्पर्शनेन्द्रियप्राण, कायवलप्राण, आयु व श्वासोच्छ्वासप्राण ये ४ प्राण होते हैं। अपर्याप्त व निर्वृत्यपर्याप्त अवस्थामें एकेन्द्रियोंके श्वासोच्छ्वास विना ३ प्राण होते हैं।

एकेन्द्रिय जीवों में संज्ञा चारों होती हैं। एकेन्द्रियजीवों के गति तिर्यञ्चगति है। इन्द्रिय स्पर्शनेन्द्रिय है। काय—स्थावर में पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्नि-काय, वायुकाय व वनस्पितिकाय में कोई एक। निगोद जीवके वनस्पतिकाय ही होती है। लब्ध्यपर्याप्त द्वीन्द्रियादि जीवों का नाम निगोत भी है, किन्तु निगोद नहीं।

एकेन्द्रिय पर्माप्त जीवोंके योग औदारिककाय योग होता है। अपर्याप्त जीवोंके औदारिक मिश्रकाय योग अथवा पहिले कार्माणकाययोग पश्चात् औदा-रिक मिश्रकाय योग होता है।

वेद—नपुंसकवेद। कषाय स्त्रीवेद व पुरुषवेद विना २३। ज्ञान कुमति कुश्रुत। असंयम। अचक्षुर्दर्शन। कृष्ण नील कापोत लेश्या। भव्य या अभव्य कोई एक सदा। मिथ्यात्व। असंज्ञी। मोड़ेवाली विग्रहगति में अनाहारक, शेष समय आहारक।

एकेन्द्रियों में संदृष्टि द्वारा उक्त कथन

गति	इ०	काय	योग	वेद	कषा०	ज्ञान	सं०	द०	ले०	अ०
ति०	स्प०	५	१ २	१	२३	२	असं०	अच०	३	१

स०	सं०	आ०
मि०	असं०	१ २

एकेन्द्रिय जीवों में एक जीवके कषायें २३ एक साथ नहीं पाई जाती। एक साथ ७, ८, ९ पाये जाते हैं। क्रोध आदि में १ चार प्रकारका ४+२ युगलमें +१ नपुंसतवेद=७+१ भय या जुगुप्सा=८+१=९। व ७ में भय जुगुप्सा दोनों मिलकर ९ होते हैं। एकेन्द्रिय जीवों में औदारिककाययोग औदारिकमिश्रकाययोग व कार्माणवकाययोग ३ योग पाये जाते हैं परन्तु एक समय में १ ही योग होता है। विग्रहगतिके मोड़ोंमें रहने पर केवल कार्माण-काययोग रहता है। जन्मस्थान पर पहुंचने पर औदरिकमिश्रकाययोग होता है। यदि पर्याप्त एकेन्द्रिय हो तो पर्याप्त होने पर मात्र औदारिककाय योग होता है। १/१/१

एकेन्द्रिय जीवों के ज्ञान १+१=२ एक समय में एक ही होता किन्तु सब मिलकर २ ही होते हैं वे हैं कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान। ये ज्ञान गुण नहीं किन्तु ज्ञानोपयोग हैं।

एकेन्द्रिय जीवों की संख्या अक्षयानन्त है।

एकेन्द्रिय का क्षेत्र सर्वलोक (३४३ घनराजू) है

एकेन्द्रिय का स्पर्शन भी सर्वलोक है।

एकेन्द्रिय का काल अन्तमुर्हूर्त से लेकर अनंतानंत काल है।

एकेन्द्रिय का कभी अंतर नहीं होता है।

एकेन्द्रिय के भाव मूल ३ हैं—

१ औदयिक/२ क्षायो प०/३ पारिणामिक

उत्तरभाव इस प्रकार हैं

औदयिक/७/क्षायोप०/६/पारिणामिक/२/ ये तो एकजीवके हैं और औदयिक १३/क्षायो०/८/पारिणामाकि /३/ ये नाना जीवके हैं।

एकेन्द्रिय जीवके आयुर्बंधके कारण लेश्या के मध्यम अंशोंमें से ५ अंश होते हैं प्रारम्भ के। आठों मध्यमांशों का चित्र इस प्रकार हैं—

कषायके शक्तिस्थान / तीव्रतरशिलाभेदस्थान	१४ लेश्यास्थान	२० बंधबंधस्थान
तीव्र भूमेद समान	१ कृष्ण	०
	१ कृष्ण	नरकायु
	कृ० १	नरकायु १
	कृ० २	नरकायु १
	कृष्णादि ३	नरकायु १
	कृ० ४	न० ति० २
	कृ० ५	न० ति० म० ३
	कृ० ६	सब ४
	कृष्णादि ६	सब ४
मंदधूलि भेदसम्मान	नी ५	सब ४
	का० ४	सब ४
	पीता दि ३	ति०म०दे० ३
		म० दे० २
		दे० १
		दे० १
		दे० १
मंदतर जलरेखा समान	पद्मा० २	०
	शु० १	०
	शु० १	०
		०

आयुके अपकर्षों का दृष्टान्त जैसे—पूर्णआयु ६५६१ है तो–२१८७–७२९–२४३–८ –२७–९–=१ इसतरह आठ अपकर्षकाल हैं।

एकेन्द्रियके प्रमाद ४ प्रकार से होते हैं। इसमें एक इन्द्रिय द्वारा ही ज्ञानका विकास है अतः विशेष प्रमादकी योग्यता भी नहीं है—

स्पर्शनेन्द्रिय वंश गतः ०

निद्रालु स्नेहवान् ०

क्रोधी १/मानी २/मायावी ३/लोभी ४

इस प्रकार (१) स्पर्शनेन्द्रियवशंगतः क्रोधी निद्रालु स्नेहवान् (२) स्पर्शनेन्द्रियवशंगतः मानी निद्रालु स्नेहवान (३) स्पर्शनेन्द्रिय बशंगतः मायावी निद्रालु स्नेहवान (४) स्पर्शनिन्द्रियवंशगतः लोभी निद्रालु स्नेहवान ये ४ प्रकारके प्रमाद एकेन्द्रिय जीवोंमें हैं।

एकेन्द्रिय जीवोंके जन्म स्थानों (योनियों) के प्रकारोंका वर्णन इस प्रकार है।

नाम	संख्या
पृथ्वीकाय	७ लाख
जलकाय	७ लाख
अग्निकाय	७ लाख
वायुकाय	७ लाख
प्रत्येक वनस्पति	१० लाख
नित्यनिगोद	७ लाख
इतर निगोद	७ लाख

एकेन्द्रिय जीवोंके शरीरोंका प्रकार (कुल) इस प्रकारसे वर्णित है।

नाम	संख्या
पृथ्वीकायिक	२२ लाख कोटि
जलकायिक	७ लाख कोटि
अग्निकायिक	३ लाख कोटि
वायुकायिक	७ लाख कोटि
वनस्पतिकायिक	२८ लाख कोटि

एकेन्द्रिय जीवके कर्मबन्ध इस प्रकार हो सकता है। विशेष जीवोंके, पर्याप्त अपर्याप्तों के हिसावसे मात्र साधारण अन्तर रहता हैं।

कर्मनाम	प्रकृति संख्या	
	नाना जी०	एक जीव
ज्ञानावरण	५	५
दर्शनावरण	९	९
वेदनीय	२	१
मोहनीय	२६	२२

आयुकर्म	२	१।
नामकर्म	२६	२३, २५, २६
गोत्रकर्म	२	१
अन्तरायकर्म	५	५

एकेन्द्रिय जीवोंमें कर्मका उदय इस प्रकार हो सकता है।

कर्मनाम	प्रकृति संख्या	
	माना जीव	एक जीव
ज्ञानावरण	५	५
दर्शनावरण	६	५
वेदनीय	२	१
मोहनीय	२४	१०, ९, ८
आयुकर्म	१	१
नामकर्म	३६	२६,२५,२४,२३,२२
गोत्रकर्म	१	१
अन्तराय	५	५

एकेन्द्रिय, जीवोंमें कर्मोंकी प्रकृतियोंका सत्ता इस प्रकारसे हो सकती है।

कर्मनाम	प्रकृति संख्या	
	नाना जीव	एक जीव
ज्ञानावरण	५	..
दर्शनावरण	९	९
वेदनीयकर्म	२	२
मोहनीयकर्म	२८	२८, २७ २६
आयुकर्म	३	२, १
नामकर्म	९२	२६,२५,२३२२आ
गोत्रकर्म	२	१, २
अन्तरायकर्म	५	५

अपूर्ण

अहिंसा प्रिंटिङ्ग प्रेस, मेरठ।